वेदों से – वायु विज्ञान

देश के शीर्षस्थ वैज्ञानिक डॉ. राजा रामन्ना ने एक वक्तव्य मद्रास में दिया जो दैनिक हिन्दुस्तान में २९-७-८५ को प्रकाशित हुआ, जिसमें उन्होंने वेदों को ज्ञान की खान बतलाया है। लेकिन हमारे यहाँ महाभारत के उपरान्त इस विषय में सही मार्गदर्शन किसी ने नहीं दिया। महर्षि दयानन्दने निष्पक्ष दृष्टि से जो वेदभाष्य किये, उनके भावार्थ से यह लगता है कि वे भी साधनों की कमी व समयाभाव के कारण केवल इसका कुछ आभास पासके थे कि वेद विज्ञान के अगाध स्रोत हैं। जैसा कि आर्य समाज के नियम से कि वेद सब सत्य विद्याओंका पुस्तक है, वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्योंका परम धर्म है। आज हम उनके वेदभाष्य को निष्पक्ष दृष्टि से अध्ययन करते हैं तो लगता है कि वेदोंमें मनुष्य मात्र को जीवन यापन करने के लिये भौतिक विद्याओं का ज्ञान कराया गया है।

वेदोंमें विज्ञान के हर सिद्धान्त का बीज रूप में बहुत ही संक्षेप में वर्णन मिलता है। जैसे – ऋग्वेद में वायु विज्ञान को लीजिए, इसमें वायु के विज्ञान को मधुच्छन्दा ऋषि ने मंडल १ सूक्त २ वर्ग ३ मंत्र (१ से ५) को देखने से ज्ञात होता है कि एक (दर्शत) शब्द में ही वायु का स्पर्श आदि या ज्ञान से देखने योग्य गुणों का ज्ञान दे दिया है। (वायी) शब्द से अनंत बल युक्त, सब पदार्थों का आधार और सब प्राणियों के जीवन का हेतु सिद्धांत दे दिया है। (हवम्) शब्द से भी वाणी सिद्धांत दे दिया है जिस से सब प्राणी कहते और सुनते हैं, उसका मूल आधार वायु ही है। (अहर्निद) शब्द से विज्ञान रूप प्रकाश को प्राप्त कराने वाली क्रियाओं के साधन वायु को ही बताया गया है। (प्रपंचति) शब्द द्वारा सब विद्याओं का संबंध करानेवाला वायु ही होता है। (उरुचि) शब्द से क्रिया विशेष/द्वारा अनेक विद्याओं के प्रयोजनों को प्राप्त कराने का साधन वायु को ही बताया है। (इमे सुता) नामक शब्द से प्रत्यक्ष जलक्रिया में चरा को करनेवाला वायु ही है। (सुत सीगा) शब्द से औषधि आदि पदार्थों को उत्पन्न करनेवाला भी वायु विशेष ही है। (इन्दवः) शब्द द्वारा सूर्य, भूमि को रोकनेवाला या आकर्षण करनेवाला वायु विशेष ही होता है। (प्रयोमि) अन्नादि पदार्थों को उत्पन्न करनेवाला वायु विशेष ही होता है। (वाजिनी बसु) शब्द से प्रातः काल के तुल्य पदार्थो को उत्पन्न करनेवाला (सुतनाम) चेतत क्रिया द्वारा सब पदार्थों को दृष्टि गोचर करनेवाला, (इन्द्रवायु)

सूर्य और पवन के योग से अनेक कार्य करनेवाला वायु ही होता है।

इस प्रकरण का यजुर्वेद के अध्याय ७ मंत्र ८ और अध्याय ३३ के मंत्र ५६ में (निरुक्त १०-२) (तैत्तरीय संहिता १-४-४-१) द्वारा भी आपसी संबंध प्रकट होता है। इसी तरह स ऋग्वेद के चौथे वर्ग में भी सूर्य, अग्नि तथा जल से संयोग होनेवाले वायुकर्मों का अनेक शब्दों द्वारा सिद्धांत दिए है। यह प्रकरण यजु. ३३-५७ और सामवेद उत्तरार्चिक ८५१ में भी है जिस में वर्षा, वायु विज्ञान के संबंध में अनेक शब्दों के द्वारा सिद्धान्त दिए हुए हैं। ऋग्वेद के प्रथम मंडल के छठे सूक्त में ११, १२ वें वर्ग के मंत्रों में सब कारीगरी की शिल्पको सिद्ध करनेवाला वायु-सिद्धांत, सूर्य-सिद्धांत, वाणीका व्यवहार करानेवाला वायु-सिद्धांत, अन्तरिक्ष लोकों के विभाग करानेवाला वायु-सिद्धांत का भी दिग्दर्शन कराया गया है। यह (सामवेद उत्तरार्चिक, ८५०) (अथर्व २०-४०-१०३) (२०-६८-१२ व २०-७०- २ ते ६) निरुक्त ४-१२ द्वारा भी बंधे है। ऋग्वेद (१-१०-२) में वर्ग १९ वे में युथेन वायु के कर्मसिद्धांत दिये हैं।

कण्तोमेधातिथ ऋषि ने भी (ऋ. १-१५-२) व वर्ग २८ में पदार्थों को अच्छी प्रकार दिलानेवाले वायु कर्म सिद्धान्त दिये है। इन्हीं ऋषिने १९ वे सूक्त के ३६ वे वर्ग के मंत्रो में अग्नि के साथ प्रयुक्त होनेवाले पतन-गुण कर्म सिद्धान्त को दर्शाया गया है। यह सागनंद पूर्वार्चिक के १६ वे मंत्र तथा (निरुक्त १०-३६) द्वारा भी निर्देशित हैं। १९ वे सूक्त में ही ३७ वे वर्ग में प्रकाशमान लोक, अन्तरिक्ष, अग्नि, जलवर्षा विज्ञान को अनेक शब्द सिद्धान्तों द्वारा दर्शाया गया है। २१ वे सूक्त में दूसरे अध्याय के तीसरे वर्ग के मंत्रों में, वायु, अग्नि द्वारा सब संसारी पदार्थों की रक्षा और पालन करनेवाले वायु-सिद्धान्तों को दर्शाया गया है। २३ वे सूक्त के ८ वे वर्ग के मंत्रों में अतिसूक्ष्म चलायमान पदार्थों को अपने अंदर करनेवाली तीव्रावायु सिद्धान्त, प्रकाशयुक्त आकाश में विमानों पहुंचाने वाले दिव्य गुण अग्नि-पवन के कर्मों के सिद्धान्तों को दर्शाया गया है।

चीरकाण्व ऋषि – ने ३७ वे सूक्त क्र. १२ वे वर्ग में विमानों और यानों में अश्व शक्ति को वेगरूप देनेवाले पवन समूह कर्म सिद्धान्त का दर्शन कराया है। (सामवेद : पूर्वार्चिक १३५) (नि. ७) (तैत्तरीय सं. ४-३-१३-६) द्वारा भी निर्देशित है। इसी सूक्त के १३ वें वर्ग के मंत्रों मे अंतरिक्ष में रहनेवाले, प्रकाशमान और अप्रकाशमान लोकों में फैंकने और पहुंचानेवाले वायु -कर्म-गुण सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला है। यह (साग पूर्वा मंत्र २२१) द्वारा संबंधित है। १४ वे वर्ग के मंत्रों में वर्षा वायु सिद्धान्त, तथा विमानों को शीघ्र गमनागमन करानेवाले तथा लोकों को रोकनेवाले पवन और किरण के सिद्धान्तों को दिया है। २८ वे सूक्त के १५ वे वर्ग में मंत्रों में लोकों को रोकनेवाले पवन और किरण सिद्धान्तों को दर्शाया गया है। इसी सूक्त के १६ वे वर्ग के मंत्रों में अन्तरिक्ष में विद्युत उत्पन्न करनेवाले वायु सिद्धान्तों का वर्णन है। (तैत्त. सं. २-४-८-१ व ३-१-११-५) द्वारा भी निर्देशित है। १७ वें वर्ग में शब्द उत्पन्न करनेवाले वायु-पवन के गमन, बल, व्यवहारों द्वारा कला-चक्र विमान आदि रथों को चलानेवाले वायु-कर्म सिद्धान्तों का दर्शन कराया है। ३९ वे सूक्त के १८ वे वर्ग में शस्त्रों में प्रयुक्त होनेवाले, सब को कंपानेवाले वायु-किरण सिद्धान्त को बताया है। (तैत्त. ब्रा. २-४-४-३)। १९ वें वर्ग में रक्त गुण युक्त अग्नि को रथों में युक्त करके, स्थल, अंतरिक्ष में ले जानेवाला वायु कर्म सिद्धान्तों का दर्शन कराया है। (निरुक्त ६-२३)। ४३ वे सूक्त के २६ वें वर्ग में प्राण वायु कर्म सिद्धान्त दिये हैं। (तैत्त. ब्रा.३-४-११-२) व (तैत्त. आ. १०-१७-१) द्वारा निर्देशित है। ७ वें वर्ग में प्राण वायु पदार्थ कर्म सिद्धान्त दिए हैं।

राहुगण गौतम ऋषि – ने (१-८५-१-६) मंत्रो में २ अष्टक १ अध्याय ६ के ९ वे वर्ग के मंत्रों में रथों में वायु से उक्त जलों को प्रायुक्त करने की क्रिया-सिद्धान्तों का वर्णन है। यह अथर्व २०-१३ द्वारा भी बंधे हैं। १० वे वर्ग में अग्नि-जल की वर्षा युक्त वायु का विमानों में प्रयुक्त होनेवाले वायु कर्म सिद्धान्तों का दर्शन कराया गया है। (तैत्त. सं.१-५-११-५)(४-१-११-३)(तैत्त. ब्रा. २-८-५-१६) द्वारा भी निर्देशित है। ८६ वें सूक्त के ११ वें वर्ग में वायु द्वारा रक्षण गुण कर्म सिद्धान्तों का वर्णन है। जो (यजु. ८-३१)(अथर्व १-२) (तैत्त. सं. ४२१-११,१-२) १२ वें वर्ग में शस्त्रों में प्रयुक्त होनेवाले वायु सिद्धान्त (शाम. उत्तरा १५६४) (तैत्त. सं. ४-३-१३-५) द्वारा आर्तना ८७ वे सूक्त के १३ वें वर्ग में विभाग तथा शस्त्रों में प्रयुक्त होनेवाले वायु कर्म सिद्धान्त दिये हैं। (निरुक्त ४-१६) (तैत्त. सं. २-१-११-८) (४-२-११-२) (४-३-१३-७) द्वारा निर्देशित है। ८८ वे सूक्त में १४ वें वर्ग में तार, विद्युत, विमान आदि में प्रयुक्त होनेवाले वायु-कर्म-सिद्धान्तों का वर्णन है। निरुक्त ५-४ तथा ११-१४ द्वारा निर्देशित है।

परुच्छेप ऋषि – ने (१-१३४-१ से ६) मंत्रों में तथा दूसरे आरण्यक के मंत्रों में बहुत अश्व लगे विमानों में प्रयुक्त होनेवाले वायु-कर्म सिद्धान्त दिये है। इसी सूक्त के २४ वें वर्ग में एक देशसे दूसरे देश में पहुँचने वाले वायुकर्म सिद्धान्त है। २५ वे वर्ग में परमाणुओं में प्रयुक्त होनेवाले वायु संगत सिद्धान्तों का वर्णन है।

अगस्त्य ऋषि – ने १६६ वे सूक्त के १०५ मंत्रों में अथवा दूसरे अष्टक के चौथे अध्याय के प्रथम वर्ग में बहुत प्रकार के शब्द करनेवाले वायु-कर्म सिद्धान्त दर्शाए हैं। दूसरे वर्ग में तीव्र गुणकर्म स्वभावयुक्त वायुओं के कर्म सिद्धान्त दिए हैं। तीसरे वर्ग में किरणों तथा अंतरिक्ष में प्रयुक्त होनेवाले वायुओं के सिद्धान्त दिये हैं। चौथे वर्ग में विद्युत आकर्षण करनेवाले वायु सिद्धान्तों का दर्शन है। (ऋ. १-१६५) तथा (१६७-११) द्वारा भी निर्देशित है। ५ वें वर्ग में (गुवाम्) नामक वायु के कर्म सिद्धान्तों का वर्णन है। ६ वें वर्ग में प्राणवायु गुण-कर्म सिद्धान्त दिये गये है।७ वे वर्ग में वायुगति सिद्धान्त। १७१ वें सूक्त के ११ वें वर्ग में अतिवेगवान अश्वोंको चलाने वाले वायु सिद्धान्त दिये हैं। १२ वें वर्ग में चिकार्य रचित मेघ के सदृश वायु कर्म सिद्धान्त दिये हैं।

गुप्त समद ऋषि – ने दूसरे मंडल के ३४ वे सूक्त के १ से ५ तकके मंत्र में यानों में प्रयुक्त होनेवाले अश्वों में प्रयुक्त होनेवाले वायु-कर्म सिद्धान्तों का वर्णन है। (अष्टक २-७-१९) (तैत्त. ब्रा. २-५-५-४ द्वारा निर्देशित है। २० वें वर्ग में रथ तथा विभागों में भी वायु कर्म सिद्धान्त दिये है। २१ वे वर्ग में यान शिल्प में प्रयुक्त होनेवाला वायु-कर्म सिद्धान्त है। ३५ वे सूक्त के ७ वे वर्ग में उस चाल चलनेवाले विमान में प्रयुक्त होनेवाले वायु कर्म सिद्धान्त दिया) (सा. पूर्वा ६००, उत्तरा ९१०, ९११) (यजु. ७-९-२ नं. ७-२९-३२) द्वारा निर्देशित है।

विश्वामित्र ऋषि – ने तीसरे मंडल के २६ वें सूक्त के ४ से ६ मंत्रों में अथवा तीसरे अष्टक के प्रथम अध्याय के २६, २७ वें वर्ग में सेचन क्रिया करने वाले जल में मिलने वाले वायु-कर्म सिद्धान्तों का

वर्णन है। (तैत्त. ब्रा. ३-६-१-३) द्वारा भी निर्देशित है।

वामदेव ऋषि – ने चौथे मंडल के ४६ वे सूक्त को १-७ मंत्रों अथवा तीसरे अष्टका के सातवे अध्याय के २३ वें वर्ग के मंत्रों में सूर्य-विद्युत में प्रयुक्त होनेवाले वायुओं का वर्णन, ३४ वे वर्ग के मंत्रों में विद्युत में प्रयुक्त होनेवाले वायु कर्म गुण सिद्धान्त दिए हैं। (साम. उत्त. १६२८ से १६३०) (यजु. २७-३०) (तैत्त. ब्रा. २-४-७-६) द्वारा निर्देशित है। २५ वें वर्ग में स्वर्ण आदि से जडे अन्तरिक्ष यानों में प्रयुक्त होनेवाले वायु कर्म सिद्धान्तों का वर्णन है। (तै. सं. २-२-१२-७) द्वारा निर्देशित है।

श्यापाश्व ऋषि – ने पांचवे मंडल के ५२ वें सूक्त १ से ५ मंत्र तथा चौथे अष्टक में तीसरे अध्याय के ८ वें वर्ग में अश्वों में प्रयुक्त होनेवाले कालीशिखावाले वायु-कर्म सिद्धान्तों का वर्णन दिया है। ९ वें वर्ग में शीघ्र चलनेवाले वायु-कर्म सिद्धान्तों का वर्णन है। (नि. ५-५ तथा ६-१६) द्वारा निर्देशित है। १० वें वर्ग में शब्द करनेवाली वायु-कर्म सिद्धान्त है। ११ वे वर्ग में अनुमानत दूरदर्शन वायु-सिद्धान्त है। १२ वे वर्ग में वर्षा-वायु विज्ञान है। (तै. स. २-४-८-१)। १३ वें वर्ग में कवि-वायु सिद्धान्त है। १४ वें में वर्षा-वायु सिद्धान्त है। १५ वे में वायु-जल क्रिया संगति सिद्धान्त (विरक्त ६-४)। १६ वे मैं शस्त्रों में प्रयुक्त होनेवाले वायु कर्म सिद्धांन्त। १७ वे में पोषनकर्ता वायु-कर्म सिद्धान्त (तै. सं. २-४-८-२)। १८ वे में वायु-जल अग्नि संयोजन क्रिया सिद्धान्त। १९ वे में प्रकाशमान पदार्थों में वायु कर्म सिद्धान्त। २० वे में रजोगुणी अश्विनी वायुकर्म सिद्धान्त। २१ वे में वायुयान अस्त्रशस्त्रों में प्रयुक्त होनेवाले सिद्धान्त। २२ वे में वायुयान किरण वायु सिद्धान्त। २३ वे में पदार्थ वृद्धि करनेवाला वायु सिद्धान्त (तै. ब्रा. २-८-५-७)। २४ वे में वाहन अश्वशील में प्रयुक्त होनेवाले वायु सिद्धान्त। २५ वे में अग्नि, विद्युत, वायु किरण सिद्धान्त (अथर्व ७-५०-३) (वै. ब्रा. २-७-१२-४)। २६ वे में अश्वशक्ति में प्रयुक्त होनेवाले वायु सिद्धान्त। २७ वे में शिलाक्रिया में प्रयुक्त होनेवाले वायु कर्म सिद्धान्त। २८ व २९ वे में वायुयान ईंधन में प्रयुक्त होनेवाले वायु शिल्प सिद्धान्त हैं।

एवयाग रुत्रेय ऋषि – ने (५-६७, १ से ५ मंत्रों) अथवा (४-४-३३ वे वर्ग) में गर्जन शक्तिवाला वायु सिद्धान्त। बढ़े हुए बल से पृथ्वी की ओर आनेवाला वायु सिद्धान्त है।

शंयो ब्रहस्पति ऋषि – ने (६-४-९-११ से १६) अथवा (अं बक ४-८-३) में विज्ञान तथा अन्न को चेष्टा करनेवाला वायु सिद्धान्त। चौथे वर्ग में कंपनद्वारा यश सम्पन्न करानेवाले वायु और सृष्टिविज्ञान।

भारद्वाजा बृहस्पति ऋषि – ने (६-६६-१ से ५) अथवा (ऋ. अधम ५-१) अन्तरिक्ष में धूलरहित पवन कर्म सिद्धान्त। ८ वें वर्ग में अन्तरिक्ष विद्युत वायु कर्म सिद्धान्त (विरक ३-२१) (तै. सं. ४-१-११-३) (तै. ब्रा. २८५५) द्वारा निर्देशित है।

वशिष्ठ ऋषि – ने (७-५६-१ से ५) अथवा अष्टक (५-४-२३) में धारण शक्ति वायु सिद्धान्त। २४ वे वर्ग में शीघ्र वेगवायु सिद्धान्त। २५ वे वर्ग में वर्षा करानेवाला, २६ वे में जलों को धारण करानेवाला, २७ वे में वर्षा करानेवाला, २८ वे में पदार्थों से युक्त वायु सिद्धान्त। २९ वे में अधिक वर्षायुक्त वायु सिद्धान्त (निरुक्त ४-१५)। ३० वे में प्राणवायु सिद्धान्त)सा. पू. २४१) ३१ वे वर्ग में विस्तार युक्त वायु सिद्धान्त (यजु. ३-६०) (अथ ७-७७) (तै. सं. १४-१-७७) (नि. १४-३५)। (मंडल ७-८०-१-७) अथवा (५-६-१२) वायु विद्युत तत्व पदार्थ सिद्धान्त है।यजु. २-२४, ३३,३७ (ऋ. ९-९९-७) (तै. ब्रा. २-८-१-१)। १३ वें वर्ग में वायु कर्म सिद्धान्त। (यजु. २७-३३) (ऋ.७-९०-७) (तै. ब्रा. २-८-११) १४ वे वर्ग में वायु पान करनेवाले सिद्धान्त तत्व तथा पदार्थ विद्याको उत्पन्न करनेवाले वायु सिद्धान्त। (यजु. ७-७) (तै. सं. १-४-४-१)। (३-४-२-१) (यजु. २७-२७-२८) (तै. सं. २-२-१२-३) (तै. ब्रा. २-२-१-३)।

पुनर्वत्सव ऋषि – ने तीव्र गतिवान वायु को तीन टुकडों में बाटकर शस्त्रनिर्माण वायु सिद्धान्त। १९ वे वर्ग में यानो में काम आनेवाला वायु सिद्धान्त (तै. सं. २-५-११-४)। २१ वे में शस्त्रों में प्रयुक्त होनेवाला वायु-जल सिद्धान्त। २२-२३ वे में वायु, जल से चलनेवाले वायु सिद्धान्त।(अथ. ११-१-२१)। २४ वे में अन्तरिक्ष मार्ग में चलनेवाले वाहनों में प्रयुक्त होनेवाले वायु सिद्धान्त।

सौभर काण्व ऋषि – ने (८-२०-१ से ५) अथवा (६-१-३६) प्रस्थानकारो, दृढतर, चक्रादिक रथों का चलानेवाले वायु सिद्धान्त (साम. पूर्वा. ४०१)। ३७ से ३९ वे वर्ग में शब्दशास्त्रों में प्रयुक्त होनेवाला सिद्धान्त। ४० वे वर्ग में वायु औषधि सिद्धान्त।

वसोराव्य ऋषि – ने (८-४६-२५ से ३०) अथवा (६-४-६) में पृथ्वी द्वारा पालन वायु सिद्धान्त (सा. पू. १४९, १७४) (उत्तरा १७ से ८५) २९ वे वर्ग में पृथ्वी तथा अंतरिक्ष में स्थिरिता बनाए रखनेवाला सिद्धान्त।

तिरश्चीद्युतानो वा मारुत ऋषि – ने (८-९६-१४) में द्रासु नामक परमाणु दोष निवारक वायु सिद्धान्त (अथर्व २-११-३८) दिया है।

जमदग्नि भार्गव ऋषि – ने (८-१-१, ९, १०) अथवा (६-७-७) में प्रकाश तथा वेग में बसने वाले सिद्धान्त (यजु. ३३-४५)।

सौभरिकाश्व ऋषि – ने (८-१०१-१४) अथवा (६-७-१५) में अग्नि के साथ वायु-व्यवहार सिद्धान्त दिए है।

स्थूमर रश्मि भार्गव ऋषि – ने (१०-७७-१-५) अथवा (८-३-१०) में मेघ के जल बिन्दु भक्षि पदार्थों को देनेवाले वायु सिद्धान्त। ११ वे में दूर, पास से गति प्रगत करानेवाले वायु सिद्धान्त। १२ वे में वायु गुण सिद्धान्त। (निरुक्त ३-१५)। १२ वे में दीप्तवाले पदार्थ व वायु किरण सिद्धान्त।

अनित्वोवातायन ऋषि – ने (१०-१६८, १ से ४) अथवा (८-८-२६) शस्त्रों में प्रयुक्त होनेवाले वायु सिद्धान्त।

काक्षोवति ऋषि – ने (१०-१६९-१ से ४) अथवा (८-८-२७) में वायु किरण सिद्धान्त (तै. सं. ७-४-२७-१, २) (निरुक्त १-१७)।

अलोवातायन ऋषि – ने (१०-१८६-१ से ३) अथवा (८-८-४४) जीवन प्रदाता वायु सिद्धान्त (सा. पू. १८४) (सा. उत्तरा १८ से ४०, ४२) (भिरुम्ब १०) (तै. ब्रा. २-४-१-८) (आ. २-४२-२) (४-४२-२)।

इस प्रकार हम देखते है कि वेद केवल आध्यात्मिक दृष्टिकोण ही प्रस्तुत नहीं करता अपितु मात्र के भौतिक सुखों के लिए भी विज्ञान का अपार भंडार है। आशा है आज का वैज्ञानिक प्राचीन ज्ञान की खोज की ओर भी विशेष ध्यान देगा।

– वसंन्त गर्ग